International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 390-393

स्वच्छ भारत अभियान का अस्पताल स्वच्छता तथा कचरा निस्तारण पर प्रभाव का विश्लेषण (जिला बरेली के विशेष सन्दर्भ में)

[1] Dr Mohammad Israr Khan, [2] Monika Tiwari

[1] Assistant Professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

[2] Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश
वर्तमान शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान एवं इसके विभिन्न आयामों के सम्बन्ध में जन सामान्य की जागरूकता एवं प्रतिक्रिया का स्तर जानने का प्रयास किया है। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य भारत देश को सम्पूर्ण रुप से प्रदूषण रहित बनाना है। जिससे जन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े और वह रोगमुक्त जीवन जी सकें।
प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर निदर्शतया चयनित 40 लोगों से प्राप्त सूचना एवं आँकड़ों का प्रयोग करते हुए स्वच्छ भारत अभियान के क्रियान्वयन तथा उसके अस्पताल पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। स्वच्छ भारत अभियान लोगों में स्वच्छता की प्रवृत्ति को जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मूलशब्द: अस्पताल की स्वच्छता, मेडिकल वेस्टेज निस्तारण, सीवेज निस्तारण, जल प्रबन्धन, स्वच्छता अभियान।

1. प्रस्तावना
स्वच्छ भारत अभियान 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया। महात्मा गाँधी के अनुसार स्वच्छता स्वतन्त्रता के लिए नितान्त आवश्यक है। 2 अक्टूबर 2019 तक देश के सभी परिवारों को शौचालय सुविधा उपलब्ध कराना है तथा वह क्षेत्र जहाँ स्वच्छता पर यदि ध्यान न दिया जाये तो देश की आधी से ज्यादा जनसंख्या बीमारी से ग्रसित हो सकती है। अस्पतालों में रोगी को रोगों से मुक्त कराया जाता है किन्तु कई अस्पताल ऐसे भी है जिनमें स्वच्छता का अभाव है जिसके कारण मरीज को लाभ मिलने में समय लगता है।
सरकार भी शौचालय निर्माण के लिये वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इस वित्तीय साधनों में राज्य और केन्द्र सरकार का सहयोग होता है। इस अभियान द्वारा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है जिससे देश के सभी क्षेत्रों के परिवारों को बीमारी से मुक्त कराया जा सकें। स्वच्छ भारत अभियान की सहायता से प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य में बदलाव लाने का एक प्रयास है। सेहत ही दौलत है। सच्चाई यही है कि सेहत है तो सब कुछ है और अगर नहीं भी है तो हासिल किया जा सकता है। किन्तु अच्छा स्वास्थ्य हासिल करने के लिए स्वच्छता बनाये रखना नितान्त आवश्यक है। अस्पतालों में मरीजों के वार्ड की तो सफाई रोजाना की जाती है किन्तु शौचालय की स्वच्छता पर ज्यादा जोर नहीं दिया जा रहा है। जो कि बीमारियों को फैलाने का सबसे बड़ा कारण है। सफाई की कमी से होने वाली बीमारी डायरिया तथा न्यूमोनिया बच्चों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण है। पाँच वर्ष की आयु से कम के 5000 बच्चे प्रतिदिन डायरिया सम्बन्धित रोगों से मरते है। वहीं 100 में 88 बच्चों की मृत्यु, असुरक्षित यानी गंदा पानी पीने और सफाई नहीं रखने से ही हो जाती है।

2. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नांकित उद्देश्य हैं।
1. अस्पतालों में अपशिष्ट जल निस्तारण विधि का मूल्यांकन करना।
2. अस्पतालों में साधारण स्वच्छता को लेकर किए गये उपायों का विवरण व विश्लेषण।
3. अस्पतालों में कचरा निस्तारण प्रक्रिया का मूल्यांकन करना।

3. साहित्य समीक्षा
जे0 पी0 नंदा (2014) के अनुसार शहर में लगभग 88 प्रतिशत व्यक्ति दूषित जल का सेवन कर रहा है जिससे वह बीमारियों को बुलावा दे रहा है। इससे उभरने के लिए सरकार द्वारा नामामि गंगे योजना शुरू की गयी। जिससे जल को फिर सें स्वच्छ व पीने योग्य बनाया जा सकें। सुरेन्द्र कुमार तिवारी (2014) के अनुसार स्वच्छ जल व साफ–सफाई से रोगों पर नियन्त्रण पाया गया। यह स्वास्थ्य शारीरिक ज्ञान के वातावरण की ओर पहला कदम है। जो ज्ञान और स्वास्थ दोनों में लाभ पहुँचाता है।
वी0 शर्मा और वद्रा शैलजा (2015) के अनुसार भारत एक विकासशील देश है जो स्वच्छता की ओर केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है। राष्ट्र को सुव्यवस्थित करना चाहता है और जलवायु को स्वच्छ करने के बिन्दु को व्युत्पन्न करना चाहता है। आधुनिक भारत में स्वच्छता पर अध्ययन को केन्द्रित करता है।
जडेजा शैलेन्द्र सिंह (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि स्वच्छ भारत अभियान बस इधर का कचरा उधर है। यह सिर्फ नगर पालिका के कचरा घोटाले है। यहां सभी मंत्री, अधिकारी से अनुरोध है कृप्या उन साइट से स्वच्छ भारत अभियान प्रारंभ करें। डर्मना अभय बी0 (2014) के अनुसार स्वास्थ्य और स्वच्छता मानव जीवन के सबसे महत्वपूर्ण तत्थ है पूरे देश में स्वच्छता को विकसित करना और स्वच्छता की व्यवस्था करना जन स्वास्थ्य में सर्वाधिक प्रभावी है।
एस0के0 रूद्रास (2014) के अनुसार स्वच्छता प्रबन्ध का सामान्य विचार इस प्रकार हो कि जिससे जल योजना या जन जीवन दूषित

न हो, जिससे प्रतिष्ठित जीवन और स्वच्छता को प्राप्त करने में सहायता मिले। नायक अपर्णा (2014) के अनुसार अलगे पाँच वर्षो में स्वच्छ भारत लक्ष्य जो पूरा करने का उद्देश्य भारत में स्वच्छता व्यवस्था में परिवर्तन लाकर उसे ठीक करना है। जो समस्याएँ पर्यावरण से घनिष्ठता से जुड़ी हुई है। उन्हें काफी हद तक कम करना। कूड़ा–करकट का निस्तारण करना। आज भी हम जलवायु परिवर्तन, जल प्रदूषण, रसायनिकों के प्रयोग के दुष्प्रभाव का सामना करते है।

4. शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए जिला बरेली के 20 अस्पतालों का चुनाव किया गया है। शोध विषय में आँकड़े एकत्र करने के लिए द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों को एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तैयार करके 20 अस्पतालों से 40 लोगों का न्यादर्श लेकर उनसे प्रश्नावली से प्रश्न पूछे गये हैं।

द्वितीयक समंयक में समाचार पत्र तथा इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों का वर्गीकरण सारणीयन, प्रतिशत आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके निर्वचन किया गया है।

5. विश्लेषण

जनपद बरेली के अस्पतालों में स्वच्छता की स्थिति और लोगों के स्वभाव का विश्लेषण इस प्रकार है।

5.1 शोधार्थी के स्वपरीक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी

तालिका संख्या 1 में बरेली के 20 अस्पतालों में शोधार्थी द्वारा प्राप्त जानकारी का विवरण प्रतिशत के रूप में दिया गया है।

तालिका 1: शोधार्थी के स्वपरीक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी

क्रम संख्या	प्रश्न	उत्तर(प्रतिशत में)	
		स्वच्छ	अस्वच्छ
1.	शौचालय की साफ–सफाई कैसी है?	35	65
2.	वार्ड को जाने का गलियारा कैसा है?	49	51
3.	सामान्य वार्ड की साफ सफाई कैसी है?	33	67
4.	मेडिकल वेस्टेज कहाँ डाला जाता है?	इन्सीनेटर में 5	कूड़ेदान में 95
5.	मेडिकल वेस्टेज का निस्तारण किसके द्वारा किया जाता है?	मरीज द्वारा 25	कर्मचारी द्वारा 75
6.	अपशिष्ट जल का निस्तारण किस पद्धति द्वारा किया जाता है?	भू–गर्भ पद्धति 92	जल प्रवाह पद्धति 8

स्रोत सर्वेक्षण

1. शोधकत्री द्वारा सर्वे करने पर पाया कि 32 प्रतिशत अस्पताल के शौचालय स्वच्छ है तथा 3 प्रतिशत अति स्वच्छ की श्रेणी में रखे गये है। किन्तु 54 प्रतिशत अस्वच्छ तथा 11 प्रतिशत अति अस्वच्छ है। इसका कारण मरीजों की संख्या अधिक है किन्तु सफाई कर्मचारियों की संख्या कम है जिसके कारण सफाई पर ध्यान दे पाना मुश्किल हो गया है।
2. 25 प्रतिशत अस्पतालों के वार्ड स्वच्छ है और 8 प्रतिशत अति स्वच्छ जिसका कारण यह है कि वार्ड में मरीजों की संख्या कम होती है। एक वार्ड में कम से कम 2 तथा अधिक से अधिक 8 मरीज होते है। 57 प्रतिशत वार्ड अस्वच्छ है तथा 13 प्रतिशत अति अस्वच्छ है। जिन अस्पतालों में वार्ड अस्वच्छ थे वहाँ मरीजों की संख्या अधिक थी।
3. वार्ड को जाने का गलियारा 40 प्रतिशत अस्पतालों में स्वच्छ 9 प्रतिशत अति स्वच्छ था तथा 48 प्रतिशत अस्वच्छ और 3 प्रतिशत अति अस्वच्छ था।
4. अस्पतालों का मेडिकल वेस्टेंज जैसे रूई, सीरिंज, ग्लूकोज की बोतले इत्यादि का निस्तारण 95 प्रतिशत कूड़ेदान में डालकर करते है। इन्सीनेटर का उपयोग केवल 5 प्रतिशत अस्पतालों में ही किया जाता है।
5. मेडिकल वेस्टेज का निस्तारण कर्मचारी द्वारा किया जाता है किन्तु 75 प्रतिशत कर्मचारी ही यह कार्य करते है। जिसमें 25 प्रतिशत अस्पतालों में मरीजों को ही यह कार्य करना पड़ता है।
6. अपशिष्ट जल का निस्तारण 92 प्रतिशत भू गर्भ संचरण में किया जाता है जिसमें 8 प्रतिशत जल प्रवाह प्रणाली द्वारा अपशिष्ट जल का निस्तारण किया जाता है।

जन स्वास्थ्य पर प्रभाव– शोध द्वारा पाया गया कि अधिकांश अस्पतालों में मेडिकल कचरा निस्तारण कूड़ेदान में किया जाता है जो कि जन स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। यह कचरा नगर निगम द्वारा जमीन के अन्दर डाल दिया जाता है। जिससे जल के साथ–साथ वातावरण भी दूषित होता है परिणामतया जन सामान्य को कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

5.2 मरीजों से प्राप्त जानकारी

तालिका संख्या 2 में बरेली के 20 अस्पतालों में 40 मरीजों से प्राप्त जानकारी का विवरण प्रतिशत के रूप में दिया गया है।

तालिका 2: मरीजों से प्राप्त जानकारी

क्रम संख्या	प्रश्न	उत्तर (प्रतिशत में)	
1.	शौचालय की साफ–सफाई कैसी है?	स्वच्छ 35	अस्वच्छ 65
2.	वार्ड की साफ–सफाई कैसी है?	स्वच्छ 33	अस्वच्छ 67
3.	क्या रसायनिक पदार्थों का प्रयोग साफ–सफज़ई के लिये होता है?	हाँ 91	नहीं 9
4.	क्या सवंमित रोगी और सामान्य रोगी के लिये अलग–अलग वार्ड व्यवस्था है?	हाँ 17	नही 83
5.	क्या मरीजों की चादरे रोजाना बदली जाती है?	हाँ 93	नही 7
6.	क्या मरीजों के कपड़े रोजाना बदले जाते है?	हाँ 11	नही 89
7.	क्या आप स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानते है?	हाँ 98	नही 2

स्रोत सर्वेक्षण

1 आँकड़ों के विश्लेषण में पता चलता है कि 35 प्रतिशत शौचालयों की साफ–सफाई प्रतिदिन की जाती है तथा 65 प्रतिशत वार्ड की साफ–सफाई पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।
2 शोध में पाया गया कि 33 प्रतिशत वार्ड साफ है तथा 67 प्रतिशत वार्ड में कूड़ा–कचरा पाया गया।
3 91 प्रतिशत रासायनिक पदार्थों का प्रयोग साफ–सफाई के लिये किया जाता है तथा 9 प्रतिशत अस्पतालों में सादे पानी से साफ–सफाई की जाती है। जिससे अस्पतालों के रोगी से फैलने वाले वैक्टीरिया नष्ट नहीं होते बल्कि और रोगों को बढ़ावा देते है।
4 17 प्रतिशत अस्पतालों में सामान्य रोगी और सवंमित रोगी के अलग–अलग पाई है पर 83 प्रतिशत अस्पताल आज भी ऐसे है जिसमें संक्रमित तथा सामान्य रोगी के अलग–अलग वार्ड नहीं है। उन्हें एक ही वार्ड में रखा जाता है।
5 शोध में पाया गया कि 93 प्रतिशत अस्पतालों में मरीजों की चादरे रोजाना बदली जाती है। इस कार्य को करने की जिम्मेदारी स्टाफ कर्मचारी की होती है। किन्तु 7 प्रतिशत अस्पतालों में यह कार्य मरीजो को स्वयं करना पड़ता है।
6 सरकार द्वारा चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान के बारे में पूछा गया तो 98 प्रतिशत लोगों को इस अभियान की जानकारी थी किन्तु 2 प्रतिशत लोग अभी भी ऐसे है जिसको इस विषय में कोई जानकारी नहीं है।

5.3 अस्पताल प्रबन्धन से प्राप्त जानकारियाँ

तालिका संख्या 3 में बरेली के 20 अस्पतालों के अस्पताल प्रबन्धन द्वारा प्राप्त जानकारी का विवरण प्रतिशत के रूप में दिया गया है।

तालिका संख्या (3): अस्पताल प्रबन्धन से प्राप्त जानकारियाँ

क्रम संख्या	प्रश्न	उत्तर (प्रतिशत में)		
1.	क्या अपने स्वच्छ भारत अभियान को अपनाया है?	हाँ 97:	नही 3:	
2.	मरीजो को खाना कहाँ से प्राप्त कराया जाता है?	अस्पताल 4:	घर 96:	
3.	मरीजो तथा स्टाफ के शौचालय अलग–अलग है?	हाँ 75:	नही 25:	
4.	पीने के पानी की क्या व्यवस्था है?	नल इण्डिया मार्क 30:	सवमर्सिवल 40:	अन्य 30:

स्रोत सर्वेक्षण

1 स्वच्छ भारत अभियान को 97 प्रतिशत लोगों ने अपनाया है जबकि 3 प्रतिशत लोग आज भी ऐसे है जो इस अभियान के बारे में जानकर भी इस ओर ध्यान नहीं देते है।
2 प्रतिशत मरीजों को खाना अस्पताल से प्राप्त कराया जाता है जबकि 93 प्रतिशत मरीजो को खाना घर से मिलता है।
3 स्वच्छ भारत अभियान हेतु शौचालय निर्माण व्यवस्था पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया है। फिर भी 75 प्रतिशत अस्पताल ऐसे है जहाँ पर मरीजों व स्टाफ के शौचालय अलग–अलग है और 25 प्रतिशत अस्पताल ऐसे है जहाँ दोनों एक ही शौचालय का उपयोग कर रहे है।
4 शोध में पाया गया कि अस्पताल में पानी व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है। कई अस्पतालाअें में पीनें का पानी और अन्य कार्य हेतु पानी एक ही जगह से प्राप्त कराया जाता है। जिसमें 30 प्रतिशत नल इण्डियन मार्क 40 प्रतिशत सबमर्सिविल तथा 30 प्रतिशत अन्य जल व्यवस्था पायी जाती है।

5.4 स्वच्छ भारत अभियान का अस्पताल पर पड़ने वाला प्रभाव

स्टाफ स्वच्छता को लेकर सक्रिय रहते है। अस्पताल में स्टाफ कर्मचारी संख्या में बढ़ोत्तरी हुयी है तथा जगह–जगह कूड़ेदान का प्रयोग किया जा रहा है। मेडिकल वेस्टेज निस्तारण हेतु इन्सीनेटर व्यवस्था की जा रही है। जिससे कोई भी संक्रमित बीमारी न फैल सके।

5.5 स्वच्छ भारत अभियान में अस्पताल का योगदान

मरीजों को स्वच्छता के लिये प्रेरित किया जाता है। रसायनिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। मेडिकल वेस्टेज का निस्तारण कर्मचारी रोजाना करते है तथा पूरे अस्पताल में 2 से 3 बार साफ सफाई की प्रक्रिया की जाती है। मरीजों तथा स्टाफ के लिये शौचालय व्यवस्था अलग–अलग की गयी है। पीने का पानी तथा अन्य पानी कामों के लिये पानी की व्यवस्था की जा रही है। अस्पताल के अन्दर व आस–पास कूड़ा करकट इकट्ठा नहीं होने देते।

प्रस्तुत शोध में स्व–अध्ययन द्वारा पाया गया कि अस्पतालों में शौचालय की साफ–सफाई पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वहां के जनरल वार्ड की स्थिति भी सामान्य थी तथा वार्ड को जाने का गलियारा भी बहुत ज्यादा साफ नहीं था। कचरा निस्तारण के लिए कूड़े दान की व्यवस्था है किन्तु फिर भी लोग उसका उपयोग न करके वार्ड, गलियारों या फिर रोड पर कचरा डाल देते हैं।
वहीं मरीजों के न्यादर्श से पाया गया कि अस्पतालों की स्वच्छता व्यवस्था से वहां के मरीज सन्तुष्ट नहीं हैं किन्तु अस्पताल प्रबन्धक के अनुसार वहां की स्वच्छता व्यवस्था में सुधार हुआ है तथा स्वच्छता अभियान को अपनाया गया है।

6. प्राप्तियाँ

अस्पताल में शौचालय होने से मरीजों को तथा मूल रूप से महिलाओं की आराम तथा सुरक्षा में बढ़ोत्तरी हुयी है। 98 प्रतिशत लोगों को स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानकारी प्राप्त है लेकिन फिर भी वह इस ओर अपना पूरा योगदान नहीं दे रहे है। अभी भी लगभग 65 प्रतिशत अस्पतालों में स्वच्छता का अभाव है क्योंकि अस्पताल प्रबन्धन स्वच्छता को लेकर गम्भीर नहीं हैं।अस्पताल में पानी के निकास की सुविधाएँ नहीं है। कुछ लोगों को स्वच्छता की जानकारी तो है लेकिन फिर भी वह अमल नहीं कर पाते। शौचालय की साफ–सफाई में अभाव है।

7. निष्कर्ष

अस्पताल के आँकड़ों से प्राप्त हुआ है कि 18 करोड़ व्यक्ति प्रत्येक वर्ष डायरिया सम्बन्धी बीमारियों से मरते है। इसमें 90 प्रतिशत तो 5 साल से कम आयु के बच्चे होते है। अतः स्वच्छ भारत अभियान एक ऐसी योजना है जिसके द्वारा देश में अस्वच्छता से फैलने वाली बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। किन्तु इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का योगदान आवश्यक है। इस मिशन का लक्ष्य अस्पताल की स्वच्छता, शौचालय, व्यवस्था, मरीजों के स्वास्थ्य, पानी की व्यवस्था आदि में सुधार करना है किन्तु कई अस्पतालों में इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अतः कहा जा

सकता है कि स्वच्छ भारत अभियान का अस्पताल की स्वच्छता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है।

8. सुझाव

स्वच्छता भारत अभियान को सम्पूर्ण बनाने के लिए अस्पतालों में मरीजों को कचरा न फैलाने तथा स्वच्छ भारत अभियान हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जाना आवश्यक है। जिससे अस्पताल का सम्पूर्ण वातावरण रोगमुक्त हो सके। जगह–जगह पर कूड़ेदान की व्यवस्था होनी चाहिए, मरीजों व स्टाफ के शौचालय व्यवस्था अलग–अलग होनी चाहिए। इन्सनिटेर का इस्तेमाल मेडिकल वेस्टेज निस्तारण के लिय किया जाना चाहिए जिससे इस्तेमाल मेडिकल वेस्टेज को पुनः उपयोग में न लाया जाया सकें। वहां के वार्ड की साफ–सफाई, शौचालय व्यवस्था, मेडिकल कचरा निस्तारण पद्वति तथा जल व्यवस्था पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इससे न केवल अस्पताल पर बल्कि देश पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा और हमारा देश विश्व में फैली तमाम बीमारियों से मुक्त हो सकेगा।

9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 Aparna Nayak Clean India, Journal of Geosciences and Environment of Protection As. 2015, 133-139 Dot: 10, 4236/Gep2013, 35015, http://www.creactivecammous.org/licenses/ by/4.00 28 july 2015.

2 Venkata Subhara P, Semasekher S. Swach Bharat: Some Issues and Concerns, International Journal of Academic Research Issn. 2348-7666, 2015; 2, 4(4). Impact Factor: 1855. http://www.ijar.org.in

3 Ridresh Kumar Sugma, Sonali Mittranad, Arrunabha Ghosh. Kachra Mukt Shouchalaya Yukat Bharat, Copy Right 2014 Council on Energy Environment and Water. 2014, 584. http://www.ceew.in

4 Sorendra Kumar Tiwari. The Study Awareness of a National Mission: Swachh Vidyalaya in the Middle School Student of Private and Public School. PARIPEX-Indian Journal of Research, 2014; 3(12). Issn 2250.1991, www.paripex.in , http://www.indianjournal.research.com

5 Sharma V, Badra Shailja. International Journal of Advance Research in Science and Engineering IJARSE, 2015; 4(01). http://www.jarse.com Issn 2319-8354 (E).